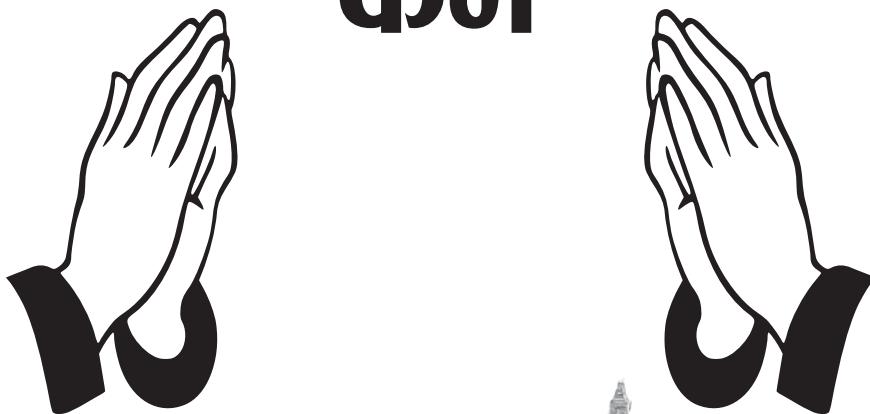

नित्य नैमितिक कर्म



मनुष्य-जीवन में प्रातकाल जागरण से लेकर रात्रिमें शयन पर्यन्त दैनिक कार्यक्रमों का पर्याप्त महत्व है। प्रायः कई सज्जन घटे-दो घंटे का समय भगवद आराधन, पूजा-पाठ, समाजसेवा तथा परोपकारादिके कार्यों में व्यतीत करते हैं, परंतु शेष समाज व्यवहार-जगत् में स्वेच्छाचारपूर्वक काम, कोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्ये तथा छल-कपट से युक्त असत्-कार्यों में भी लगाते हैं। जिसेस पाप-पुण्य और सुख-दुःख दोनों उन्हें भोगना पड़ता है।

सच्चा सुख नित्य, सनातन और एकरस शान्ति में है। उसेक अश्रु है मंगलमय भगवान्। प्रत्येक स्त्री-पुरुष का प्रयत्न उन्हीं परम-प्रभु को प्राप्त करने के लिये होना चाहिये। अतः इस भव-बन्धन से मुक्ति प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है कि चौबीस घंटे के सम्पूर्ण समय का कार्यक्रम भगवद आराधना के रूपमें हो। चलना-फिरना, उठना-बैठना, खाना-पीना, सोना सब कुछ भगवान् की प्रीति के लिये पूजा रूप में हो। पापाचरण के लिये कहीं भी अवकाश न हो, तभी स्वतः कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। अपनी दिनचर्या शास्त्र-पुराणोंके अनुसार ही चलानी चाहिये जिससे जीवन भगवत्पूजामय बन जाय।

शास्त्रों के अनुसार सूर्योदय से एक घण्टा पहले ब्रात्म मूहूर्त होता है। इस समय सोना निषिद्ध है। इस कारण ब्रतमूहूर्त में उठ कर नीचे लिखे मंत्र बोलते हुए अपने हाथ देखें।

कर मंत्र

करागे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।

करमूले स्थितो ब्रत्वा प्रभाते करदर्शनम्॥

पृथ्वी वंदना मंत्र

समुद्रवसने देवि ! पर्वतस्तनमण्डले ।

विष्णुपति ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्व मे ॥

स्नान करते समय बोले जाने वाले श्लोक

गंगे ! च यमुने ! चैव गोदावरि ! सरस्वति ।

नर्मदे ! सिंधु ! कावेरि ! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

स्नान करते समय बोले जाने वाला श्लोक
गंगे ! च यमुने ! चैव गोदावरि ! सरस्वति ।
नमदि ! सिंधु ! कावेरि ! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

सूर्य को अर्थ

एहि सूर्य ! सहस्रांशो ! तेजोराशे ! जगत्पते !
अनुकम्प्य मां भक्त्या गृहणार्थ्य दिवाकर !
द्वादश सूर्य नमस्कार मंत्र

- | | |
|------------------------|--------------------------------|
| 1. ॐ मित्राय नमः । | 8. ॐ अर्काय नमः । |
| 2. ॐ भानवे नमः । | 9. ॐ सूर्याय नमः । |
| 3. ॐ हिरण्यर्भाय नमः । | 10. ॐ पूष्णे नमः । |
| 4. ॐ सवित्रे नमः । | 11. ॐ आदित्याय नमः । |
| 5. ॐ खये नमः । | 12. ॐ भास्कराय नमः । |
| 6. ॐ खगाय नमः । | ॐ श्री सवितृ सूर्यनारायणाय नमः |
| 7. ॐ मरीचये नमः । | |

सूर्यनमस्कार

आदिदेव ! नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर ।
दिवाकर ! नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते ॥

तुलसी अर्थ मंत्र

तुलसी माता गड़वो दे लड़वो दे, पीताम्बर की धोती दे, मीठा मीठा गास दे,
बैकुंठा का बास दे, चटका की चाल दे, पटके की मौत दे, चन्दन को काठ दे,
झालर दे - भक्तार दे, साई को राज दे, ग्यारास को दिन दे, आप कृष्ण को कांधो दे ।

मंत्र

गणपति

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लबोदराय सकलाय जगद्विताय ।
नागाननाय श्रुतियत्रविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

विष्णु

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेश

विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्य

वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथनम् ॥

श्री रामचन्द्र

रामो राजमणिः सदा विजयते राम रमेश भजे रामेणाभिहता निशाचरचम्

रामाय तस्मै नमः ।

राभास्नास्सि परायणं परतं रामस्य दासोऽस्यहं

रामे चित्रलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥

लोकाभिरामं रणरंगधीरं, राजीवनेत्रं, रघुवंशनाथम् ।

कारूण्यरूपं करूणाकरं तं, श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥

ब्रह्मा

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय, नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय ।

नमोऽद्वैतत्वाय मुक्तिप्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यपिने शाश्वताय ॥

शंकर

कर्पूरगौरं करूणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारं ।

सदावसन्त हृदयारविन्दे भवं भवानी सहित नमानि ॥

हनुमान

मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमता वरिष्ठम् ।

वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

श्रीकृष्ण वंदना

वसुदेवसुतं देवं कसचाणूरमर्दनम् ।

देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जागद्गुरुम् ॥

गोपालकृष्ण

कस्तूरीतिलंकं ललाटपटले वक्षः स्थले कौस्तुभं

नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम् ।

सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कंठे च मुक्तावलिः

गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः ॥

महामृत्युंजय मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम् ।
उव्वर्ण्णकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।

गायत्री महामंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुवरिण्यम् ।
भर्गा देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

नवग्रहस्मरणम् मंत्र

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो ब्रह्मच ।
गुरुः च शुक्रः शनिराहुकेतवः, कुर्वन्त सर्वे मम सुप्रभातम् ॥

तुलसी अर्पण मंत्र

पूजनातन्तरं विष्णोरपितं तुलसीदलम् ।
भक्षये देहशद्वर्यथ चान्द्रायणशताधिकम् ॥

बिल्वपत्र अर्पण मंत्र

काशीवास निवसीनाम् कालभैरवपूजन्
कोटिकन्या महादानम् एकबिल्व शिवार्पणम्
दर्शन बिल्वपत्रस्य स्पर्शन पापनाशन्
अद्योरपाप संहारम् एकबिल्व शिवार्पणाम्
त्रिदल त्रिगुणाकार त्रिनेत्र च त्रयायुधम्
त्रिजन्मपापसंहार एकबिल्व शिवार्पणम्

पुष्ट अर्पण

सेवन्तिका वकुल चपक पाटलाब्जै, पुन्नाङ्गजात करवीर विशाल पुष्टैः ।
विल्वप्रवाल तुलसी दल मंजरीभिस्त्वं, पुजयामि जगदीश्वर मे प्रसीदः ॥

पुष्पांजलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथममान्यासन् ।
ते ह नाक महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥
ॐ मंत्र पुष्पांजलि समर्पयामि ॥

ब्राह्मण तिलक मंत्र

ॐ नमो ब्रतपणदेवाय गोब्रात्पणहिताय च ।
जगद्विताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

ब्राह्मण रक्षाबन्धन मंत्र

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दिक्षयाऽप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा-श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

पंचामृत अर्पण मंत्र

दुःखदौर्भाग्यनाशाय सर्वपापक्षयाय च ।
विष्णोः पंचामृतं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

नैवेद्य अर्पण मंत्र

नैवधमन्नं तुलसीविमिश्रित विशेषतः पादजलेन विष्णोः ।
योऽशनति नित्य पुरतो मुरारे: प्राप्नोति यज्ञायुतकोटिपुण्यम् ।

चरणामृत ग्रहण मंत्र

अकालमृत्युहरण सर्वव्याधिविनाशनम् ।
विष्णुपादोदक पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

भोग लगाने का मंत्र

त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये ।
गृहाण सम्मुखो भुत्वा प्रशीद परमेश्वरः ॥

ध्यान मंत्र

त्वमेव माता च पिता त्वमेम, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविण त्वमेव, त्वमेव सर्व मन देवदेव ॥
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा, बुद्ध्यत्मान वा प्रकृतेः स्वभावात् ।
करोनि यद्यद् सकल परस्मै, नारायणायेति समर्पयामि ॥

शयन मंत्र

जले रक्षतु वाहाह स्थले वामनः ।
अटव्यां नारसिंश्च सर्वतः पातु केशवः ॥

कल्याण मंत्र

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
 सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभागभवेत् ॥
 ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः शान्तिः

मंगलकामना

गंगा सिंधु सरस्वती च यमना गोदावरी नर्मदा
 कावेरी सरयू महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका ।
 क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता जया गंडकी
 पूर्णा: पूर्णजलैः समुद्रसहिताः कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥

पञ्च कन्याएँ

अहल्या द्रोपदी तारा कुन्ती मंदोदरी तथा ।
 पंचकंना स्मरेन्नत्यं महापातकनाशनम् ॥

सात मोक्ष पुरियाँ

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवंतिका ।
 पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः ॥

तुलसी माता को नमस्कार

तुलसि ! श्रीसखि शिवे पापहारिणि पुण्यदे ।
 नमस्ते नारदनुते नमो नारायणप्रिये ॥

सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्

ईश्वर सत्य है । सत्य ही शिव है । शिव ही सुन्दर है । नमामि देवं वरदं
 वरेण्यं, नमामि देवं च सनातनम् ।
 नमामि देवाधिपमीश्वरं हरे, नमामि शम्भूं जगदैकबन्धुम् ॥

पंचामृत ग्रहण-मन्त्र

दुःखदौर्भाग्यनाशाय सर्वपापश्रयाय च ।
 विष्णोः पंचामृतं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

नैवेद्य ग्रहण मन्त्र

नैवेद्यमंत्र तुलसीविमिश्रित विशेषतः पादजलेन विष्णोः ।

योऽश्नाति नित्यं पुरतो मुरारेः प्राप्नोति यज्ञायुतकोटिपुण्यम् ॥
हरिः अँ तत्सत्परमात्मने नमः

प्रदक्षिणा

यान कनिं च पापानि जन्मातकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणं पदे पदे ।
यो तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्तानिषगणः ।
तेषा सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि ॥

क्षमा-प्रार्थनाः

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजा चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन ।
यत्पूजितं मया देव ! परिपूर्णं तदस्तु मे ॥
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यता देव ! प्रसीद परमेश्वर ! ॥

चरणामृत ग्रहण - मन्त्र

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् ।
विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्मं न विद्यते ॥
भोजन करते समयं बोलने के श्लोक
अंहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः ।
प्राणापानसमायुक्तः पचास्यन्नं चुविधम् ॥

सांय-कृत्य

दीपज्योतिः परब्रह्म दीपज्योतिर्जनार्दनः ।
दीपो हरतु मे पापं सन्ध्यादीपं नमोऽस्तुते ॥
शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं सुखसम्पदाम् ॥
मम बुद्धिप्रकाशश्च दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

देवपूजा में विचारणीय तथ्य

1. पूजा सामग्री को शुद्ध करके रखें।
2. देवताओं को अंगूठे से न मलें।
3. पुष्प अधोमुख करके नहीं चढ़ावें। वे जैसे उत्पन्न होता है वैसे ही चढ़ावें। बिल्वपत्र उल्टा करके चढ़ावें तथा कुश के अग्रभाग से देवताओं पर जल न छिड़कें।
4. धोती में रखा हुआ और जल में डुबाया हुआ पुष्प देवता ग्रहण नहीं करते।
5. शिवजी को कुन्द, विष्णु को धतूरा, देवी को आक तथा मंदरा और सूर्य को तगर का पुष्प नहीं चढ़ावें।
6. विष्णु को चावल, गणेश को तुलसी, दुर्गा को दुर्वा और सूर्य भगवान को बिल्वपत्र नहीं चढ़ाएं।
7. संकान्ति, द्वादशी, अमावस्या पूर्णिमा, रविवार और सन्ध्या के समय तुलसी नहीं तोड़नी चाहिए।
8. पूजन के समय पूर्वाभिमुख बैठकर बाँयी ओर घण्टा, धूप तथा दाहिनी ओर शंख, जलपात्र, पूजन की सामग्री रखें। फिर आचमन प्राणायाम करके संकल्प करें।
9. देवताओं के प्रीत्यर्थ प्रज्वलित दीप को बुझाना नहीं चाहिए।
10. धूत का दिपक अपनी बायीं ओर तथा तेल का दाहिनी ओर पूर्व या उत्तर मुख करके चावल आदि पर स्थापित कर प्रज्वलित करके हाथ धोवें।
11. जो मूर्ति स्थापित हो चुकी है, उसका आवाहन और विसर्जन नहीं करना चाहिए।
12. कमल को पाँच रात, बिल्वपत्र को दस रात और तुलसी को ग्यारह रात तक प्रक्षालन कर पूजन के कार्य में लिया जा सकता है।
13. पंचामृत में यदि सब वस्तु (दूध, दहीं, धूत, मधु, शर्करा) प्राप्त न हो तो केवल दुध से स्नान कराने मात्र से पंचामृत जन्य फल

मिलता है।

14. हाथ में धारण किये पुष्प, ताम्बे के पात्र में चन्दन और चर्मपात्र में गंगाजल अपवित्र हो जाता है।
15. दीपक को दीपक से जलाने से दरिद्र और रोगी होता है।
16. दक्षिणाभिमुख दीपक को कभी न रखें।
17. देवी के बाएँ दीपक और दाहिने नैवेद्य रखें।
18. एक हाथ से प्रणाम करने और एक प्रदक्षिणा करने से पूर्व किया हुआ पुण्या नष्ट हो जाता है। केवल चण्डी और विनायक की एक ही प्रदक्षिणा का साधारण विधान मिलता है।
19. प्रतिदिन की पूजा में पूजा की सफलता के लिए दक्षिणा अवश्य ही चढ़ावे। उसे किसी ब्रात्यण को देवें।
20. मांगलिक कार्यों में दूसरे की पहनी हुई अंगूठी धारण नहीं करनी चाहिए।

व्रतों में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का रहस्यमेद

पंचदेव

सूर्य, गणेश, शक्ति, शिव और विष्णु ये आराध्य पंचदेव हैं इनकी गणना विष्णु, शिव, गणेश, सूर्य और शक्ति-इस क्रम से भी की जाती है।

पंचोपचार

गंध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य अर्पण करने से पंचोपचार पूजा होती है।

कालत्रय

प्रातः काल, मध्याह्नकाल और सायंकाल हैं।

वेद

ऋग्, यजुः, सम और अथर्व ये चार वेद हैं।

वेद षडंग

कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द, शिक्षा और ज्योतिष ये छः शास्त्र वेद के

अंग हैं।

चार वर्ण

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण हैं।

पंचनदी

भागीरथी, यमुना, सरस्वती, गोदावरी और नर्मदा पांच मुख्य नदियां हैं।

पंचपल्लव

पीपल, गूलर, अशोक (आशोपालो), आम और वट इन वृक्षों के पत्ते पंचपल्लव हैं।

पंचगव्य

गौ का मूत्र, गोबर, दूध, दही, धी लेकर मिलाने से पंचगव्य होता है।

पंचामृत

गाय के दूध, व धी में चीनी और शहद और दही मिलाने से पंचामृत बनता है।

पंचरत्न

सोना, चांदी, ताम्बा, मूँगा, और मोती ये पांच रत्न हैं।

सप्तर्षि

कश्यप, भारद्वाज, गौतम, अत्रि, जमदग्नि, वशिष्ठ और विश्वामित्र ये सातऋषि हैं।

सप्तधान्य

चावल, गेहूँ, मटर, चना, मोठ, अरहर और मूँग ये सात धान्य हैं।

सप्तधातु

सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा, कांसी और रांगा ये सप्तधातु हैं।

नवरत्न

मणिक, मोती, मूँगा, सुवर्ण, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद और लहसुनिया ये नवरत्न हैं।